अध्याय–तृतीय

लोक देवों की उत्पत्ति एवं विकास

लोक मानस अलौकिक शक्तियों में विश्वास करता हैं। लोक में विद्यमान प्राकृतिक शक्तियों यथा भूमि, जल, वायु, अग्नि, सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, नदी–पर्वत, पशु–पक्षी, जीव–जन्तु, नाग आदि के भय तथा उनके अलौकिक कार्यों के प्रति विभिन्न प्रकार के अनुष्ठान भेंट–उपहार अर्पित करता है। लोक देवों के लिए देवकुर (देवकुल), देवायतन, मन्दिर आदि की स्थापना करके लोक देवों की प्रार्थना और पूजा करने की परम्परा की उत्पत्ति एवं विकास क्रमशः लोक से वेद की ओर अग्रसर हुयी। शाब्दिक साक्ष्य के प्राचीन उदाहरण हमें अथर्ववेद के भूत प्रेत, टोना, जादू, अभिचार, सम्मोहन के प्रमाण प्राप्त होते हैं, जिसका विकास परवर्ती धर्मों में हुआ, जिसका एक संक्षिप्त शोधात्मक विवरण अनुवर्ती पंक्तियों में प्रस्तुत है –

वैदिक देवपरम्परा के देव :

वैदिक देव परम्रा को विभिन्न वर्गों में विभाजित करने की दृष्टि से की है।

इस प्रसंग में ''ग्वाट्तरनामेन' के रचयिता प्रसिद्ध जर्मन विद्वान, उजेनर का मत सर्व प्रथम उल्लेखनीय है। रोमन तथा लिथुआनियन धर्म के देवताओं के आधार पर उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला है कि आर्यों के देवमण्डल में देवताओं के स्वरूप का विकास क्रमशः तीन अवस्थाओं में से होकर गया है :–

क. क्षणिक देवता :– (।नहमदतजंसपबाहवमजजमत**)** ऐसे देवता जो किसी विशेष क्रिया के ऊपर केवल उतने ही क्षण तक अधिकार रखते हैं, जब तक वह क्रिया होती रहती है। ऐसे देवता सभ्यता के विकास के बहुत प्रारम्भिक काल में पाये जाते हैं। वैदिक साहित्य में इनका कोई चिन्ह नही है।

ख. विशेष देवता :– ऐसे देवता जो जीवन या प्राकृति के किसी विशेष क्षेत्र से सम्बन्धित होते हैं, और उस पूर्ण अधिकार रखते है। जैसे–उषस्, अग्नि आदि।

ग. वैयक्तिक देवता :– जब 'विशेष देवता' धीरे–धीरे अन्य देवताओं के गुणों को आत्मसात करके अपने व्यक्तित्व को विकसित कर लेते हैं और उस विशेष क्षेत्र से अलग होकर स्वतन्त्रत हो जाते हं तो वे इस प्रकार के देवता बन जाते हैं, यथा इन्द्र, वरूण आदि।

ब्लूम फिल्ड का वर्गीकरण ही कुछ वैज्ञानिक आधार–भित्तिपर स्थित है –

1. **प्रागैतिहासिक काल के देवता :–** इनका उल्लेख अन्य आर्य देव समूह तथा अवेस्ता में प्राप्त होता है, उदाहरण – द्यौः, वरूण, मित्र, अर्यमा।

2. **पारदर्शी अथवा स्पष्ट देवताः–** इनका मानवीकरण अपूर्ण हैं और जो देवता होने के के अतिरिक्त प्रकृति के किसी विशेष तत्व को भी सूचित करते हैं, उदा0– अग्नि, उषस, वायु, सूर्य।

3. **अल्प–पारदर्शी, अर्ध स्पष्ट अथवॉ धूमिल देवता :–** ऐसे देवता जिनका व्यक्तित्व उस विशिष्ट प्रकृति तत्व से, जो उनका कारण अलग होकर पर्याप्त विकसित हो चुका है किन्तु फिर भी अंदृश्य नहीं हुआ है और थोड़े ही अन्वेषण के वाद जाना जा सकता है, उदा0–विष्णु, (सूर्य)।

4. **अपारदर्शी अथवॉ अस्पष्ट देवता :–** जो अनेक उपाख्यानों से संयुक्त होकर अपने मूल रूप से बहुत दूर हट चुके हैं और जिनका उद्भव जानने का हमारे पास कोई साधन नहीं है, उदा0– इन्द , वरूण तथा अश्विनौ।

5. **अमूर्त, भावात्मक तथा प्रतीकात्मक देवता :–** ऐसे देवता जो किसी क्रिया विशेष अथवॅ भाव को सूचित करते है अथवा देवता या राक्षस के रूप में किसी कामना अथवा भय को व्यक्त करते हैं। उदा0–प्रजापति, विश्वकर्मा, वृहस्पति, पुरूष काल, श्रद्धा, काम, निर्ऋति मन्यु।

यास्काचार्यः

इन सव विभाजनों में प्राचीन भारतीय वेद व्याख्याता ने सम्पूर्ण देवताओं को विश्व में उनकी स्थिति के अनुसार तीन वर्गों में विभाजित किया है –

क. आकाश स्थानीय देवता :– जैसे– वरूण, सूर्य, विवस्वान, विष्णु आदि।

ख. अन्तरिक्ष–स्थानीय देवता :– इन्द्र, वायु, मातरिश्वन्, पर्जन्य, रूद्र आदि।

ग. स्थानीय देवताः जैसे – पृथ्वी, अग्नि, वृहस्पति, सोम आदि।

द्यु स्थानीय देवता :–

द्यु स्थानीय देवों में अदिति के पुत्र आदित्य का नाम सर्व प्रथम आता है।1 मत्स्यपुराण में अंशु के स्थान पर अंशुमान शब्द आता है जो पूर्णतः सूर्य का पर्यायवाची है, इसी पुराण में अन्य स्थान पर (170/57) आदित्यों को सूची में न तो अंशुमान का उल्लेख है और न सविता का बल्कि इनके स्थान पर धनद (कुबेर) और पर्जन्य की गणना की गयी है।2–47

1. आदित्य गण	2. सूर्य तथा अन्य सौर देव
3. विवस्वान्	4. सविता
5. पूषन्	6. अर्यमा
7. मित्र	8. सूर्य देवता का पौराणिक रूप–ब्रह्मा, विष्णु, महेश
9. वरूण	10. मित्रावरूणौ
11. अश्विनौ	

अन्तरिक्ष स्थानीय देवातः– 48–69

1. इन्द्र	2. रूद्र
3. मरूद्गण	4. वायु

5. रूद्र (शिव 6. दुर्गा

7. गणेश 8. स्कन्द

पृथ्वी स्थानीय देवातः– 70–77

1. **अग्नि**

2. **यम**

3. **सोम**

अमूर्त अथवॉ भावात्मक देवता 78–86

1. प्रजापति

2. वृहस्पति

3. अदिति।

(ख) जैन–बौद्ध परम्परा के देव कोटियॉ

भारतीय कला तत्व वस्तुतः धार्मिक है। सम्बन्धित धर्म या सम्प्रदाय में होने वाले बदलाव अथवॉ विकास से शिल्प की विषय वस्तु में भी परिवर्तन हुए है। प्रतिमा विज्ञान धर्म से सम्बद्ध मानवेतर विशिष्ट व्यक्तियो,देव–देवताओं, शलाका–पुरूषों (मिथकों में वर्णित जनों) के स्वरूप एवं स्वरूपगत विकास का ऐतिहासिक अध्ययन है, जिसके दो पक्ष है– शास्त्र पक्ष एवं कला पक्ष।

शास्त्र पक्ष धार्मिक एवं अन्य साहित्य में वर्णित है स्वरूपों की विवरण से तथा कलापक्ष, कलावशेषों से प्राप्त मूर्त स्वरूपों के अध्ययन से सम्बद्ध है।

इस अध्ययन में जैन साहित्य का आह्वान कर जैन देवकुल के क्रमिक विकास का निरूपण एवं जैन देवकुल में समय–समय पर बदलाव और नवीन, देवों के आगमन के कारणों के उद्घाटन का प्रयास किया गया है। कालक्रम की दृष्टि से यह अध्ययन दो भागों में विभक्त है। जिसका प्रथम स्रोत सामग्री पांचवी शती0 ई0 तक का प्रारम्भिक जैन साहित्य एवं दूसरा 12वीं शती ई0 तक का परवर्ती जैन साहित्य।

प्रारम्भिक जैन साहित्य में महावीर के समय (ल0 छठीं शती0 ई0पू0) से पॉचवीं शती0 ई0 के अन्त तक के ग्रन्थ सम्मिलित हैं। प्राथमिक रूप से सभी ग्रन्थ ल0 पाँचवी शती ई0 के मध्य का छठीं शती ई0 के आरम्भ में[2] देवर्द्विगणि क्षमा श्रमण के नेतृत्व में (गुजरात) वाचन में लिपिवद्ध किये गये हैं।

आगम ग्रन्थ[3] जैनों के प्राचीनतम ग्रन्थ हैं। आगम ग्रन्थों के प्राचीनतम अंश ल0 चौथी शी ई0पूर्व के अन्त और तीसरी शती ई0 पूर्व के प्रारम्भ में।[4] काफी समय तक श्रुत परम्परा में सुरक्षित रहने के कारण कालक्रम के साथ इन प्रारम्भिक आगम ग्रन्थों में प्रक्षेपों के रूप में नयी सामग्री जुड़ती गई। जिसकी पुष्टि भगवती सूत्र (पॉचवां अंग) में पॉचवी शती ई0[5], रायपसेणिय (राजप्रश्नीय दूसरा उपांग) में कुषाण कालीन[6] और अंगविज्जा में कुषाण गुप्त सन्धि कालीन सामग्रियों की प्राप्ति से होती है। इसके अतिरिक्त कल्प सूत्र और पउमचरिय भी प्रारम्भिक ग्रन्थ है। जैन देव कोटियों में जिन चौबीस जिनों की धारणा है, वह जैन धर्म

की धुरी है, इसके अतिरिक्त इन देवकुल के अन्य देवों की कल्पना सामान्यतः इन्हीं जिनों से सम्बद्ध है एवं उनके सहायक रूप में हुई है।[7] इन जिनों को ईश्वर का अवतार या अंश नहीं माना गया है। इनका जीव भी अतीत में सामान्य प्राणी की भॉति ही वासना और कर्मबन्धन में लिप्त था, पर आत्ममनन, साधना एवं तपश्चर्या के फलस्वरूप उसने कर्मबन्धन से मुक्त होकर केवल ज्ञान की प्राप्ति की।[8] कर्म और वासना पर विजय प्राप्ति के कारण इन्जे 'जिन' हो गया, जिसका शाब्दिक अर्थ विजेता है।

24 जिनों की प्राचीनतम सूची सम्प्रति समवयांग सूत्र (चौथा अंग) में प्रप्ति है जो –

ऋषभ, अजित सम्भव, अभिनंदन, सुमति, पघ्नप्रभ, सुपार्श्व, चन्द्रप्रभ, सुविधि, पुष्पदत, शीतल, श्रेयांश, वासू पूज्य, विमल, अनंत धर्म, शांति, कुंधु, अर, मल्लि, मुनि, सुव्रत, नमि, नेमि, पार्श्व एवं वर्धमान के नाम है।[9], इनमें केवल दो जिनों, पार्श्वनाथ, एवं महावीर को ही ऐतिहासिक और महावीर के दो शिष्यों, केसी और गौतम के मध्य जैन संघ के सम्बन्ध में हुए वार्तालाप का उल्लेख[10] तथा महावीर की यह उक्ति है कि 'जो पूर्व तीर्थकर पार्श्व ने कहा है मैं वही कर रहा हूॅ''[11] पार्श्वनाथ की ऐतिहासिकता सिद्ध करते हैं।

चौबीस जिनों की सूची को ही कालान्तर में इसी रूप में स्वीकार कर लिया गया है। इन ग्रन्थों में 24 जिनों के उनसे सम्बन्धित कुछ अन्य शलाका 'सूची[12] (या उत्तम) पुरूषों का भी उल्लेख है। जिनों सहित इनकी कुल सं0 तिरसठ है। 63 शलाका पुरूषों की पूरी सूची सर्व प्रथम 43 पउमचरिय में प्राप्त होती है[13], जिसमें 24 जिनों के अतिरिक्त 12 चक्रवर्ती[14] (भरत, सागर, मधवा, सनत्कुमार, शांति, कुंधु, अर, सुभूम, पद्य, हरिषेण, जयसेन, ब्रह्मदत्ता) 9 वलदेव (अचल, विजय, भद्र, सुप्रभ, सुदर्शन, आनन्द, नन्दन, मद्मयाराम वलराम), और 9 प्रतिवासुदेव (अश्रव ग्रीव, तारक, मेरक, निशुम्भ, मधुकैटभ, वलि, प्रहलाद, रावण, जरासन्ध) सम्मिलित और 9 वासुदेव (त्रिपृष्ठ, द्विपृष्ठ, स्वयंभू, पुरूषोत्म, पुरूष सिंह, पुरूष पुण्डरिक, दत्त, नारायण, या लक्ष्मेण कृष्ण) इस सूची का बिना किसी बदलाव के वाद में स्वीकार किया गया है। जैन शिल्प के सभी 63 शलाका पुरूषों का निरूपण कभी

लोकप्रिय नहीं रहा। कुषाणकालीन जैन शिल्प में केवल कृष्ण बलराम निरूपित हुए हैं, इन्हे नेमिनाथ के पार्श्वों में आमूर्तित किया गया है।

मध्यकाल में कृष्ण, बलराम के अलावा राम और भरत चक्रवर्ती के भी मूर्त चित्रणों के कुछ उदाहरण मिलते हैं। जिसका वर्णन विस्तृत रूप में पउम–चरिय में प्राप्त होता है।

कृष्ण बलराम 22वें जिन नेमिनाथ के चचेरे भाई हैं। यहॉ हिन्दू धर्म से भिन्न कृष्ण–बलराम को सर्वशक्तिमान देवता के रूप में न मानकर बल, ज्ञान एवं बुद्धि में नेमिनाथ से ही बताया गया है।[15] उत्तराध्ययन सूत्र (ल0 चौथी–तीसरी शी0 ई0 पूर्व)[16] के रथनेमि शीर्षक 22वें अध्याय में कृष्ण से सम्बन्धित कुछ उल्लेख है। सौर्यपुर नगर में वासुदेव और समुद्र विजय दो शक्तिशाली राजकुमार थे। वसुदेव की रोहिणी और देवकी नाम की दो पत्नियॉ थी, जिनसे क्रमशः राम (बलराम) और केशव कृष्ण उत्पन्न हुए। समुद्र विजय की पत्नी शिवा से अरिष्टनेमि (नामिनाथ या रथनेमि) उत्पन्न हुए। केशव ने एक शक्तिशाली शासक की पुत्री राजमति के साथ अरिष्टनेमि का विवाह निश्चित किया। किन्तु विवाह के पूर्व ही रथनेमि ने रैवतक (गिरनार) पर्वत पर दीक्षा ग्रहण की, जहॉ राम और केशव ने अरिष्टनेमि के प्रति श्रद्धा व्यक्त की। ईसवी सन् के पूर्व ही कल्पसूत्र में श्री लक्ष्मी का उल्लेख है, शीर्ष भाग में दो गजों से अभिषिक्त श्री लक्ष्मी के कमलासीन और दोनो करों में पद्म धारण किये निरूपित किया गया है। जैन शिल्प में लक्ष्मी का मूर्त चित्रण ल0 नवी शती ई0 के वाद ही लोकप्रिय हुआ। भगवतीसूत्र में एक स्थल पर लक्ष्मी की मूर्ति का उल्लेख है।

जैन ग्रन्थों में सरस्वती का उल्लेख मेधा एवं वुद्धि के देवता या श्रुत देवता के रूप में प्राप्त होता है। भगवती सूत्र एवं पउचमरियौ में बुद्धि देवी का उल्लेख श्री, धृति, कीर्ति और लक्ष्मी के साथ किया गया है।

जैन देव परम्परा में इन्द्र को जिनों का प्रधान सेवक स्वीकार किया गया है। स्थानांगसूत्र में नागेन्द्र, स्थापेन्द्र, द्रव्येन्द, ज्ञानेन्द्र, दर्शनेन्द्र चारित्रेन्द्र, देवेन्द्र, असुरेन्द्र और मनुष्येन्द्र आदि कई इन्द्रों के उल्लेख हैं।[17]

(ख) बौद्ध परम्परा के देव

बौद्ध देव कोटियॉ–

1. ध्यानी बुद्ध[18]

1. अतिमाभ	2. अक्षोभ्य	3. वैरोचन
4. अमोघ सिद्धि	5. रत्नसंभव	6. वज्र सत्व

2. पंचध्यानी बुद्ध[19]

1. अमिताभ	2. अक्षोभ्य	3. वैरोचन
4. अमोघ सिद्धि	5. रत्नसंभव	6. वज्र सत्व

3. वोधिसत्व[20]

1. पद्म पाणि	2. वज्रपाणि	3. सामन्तभद्र
4. विश्वपाणी	5. रत्नपाणी	6. घष्टापाणि

4. मैत्रेय[21]

5. मंजुश्री[22]

6. वज्रराग[23]

7. धर्मधातु [24]

8. मंजुघोष[25]

90 सिद्धै कबीर[26]

10. वज्रानंग [27]

11. नागसंगति[28]

12. वार्वाश्वर[29]

13. मंजुवर [30]

14. भंजुवज्र [31]

15. मंजु कुमार[32]

16. अरपचन[33]

17. स्थिर चक्र[34]

18. वाढिराट्[35]

19. मंजुनाथ[36]

20. षडक्षरी लोकेश्वर [37]

21. सिंहनाद [38]

22. खसर्पण [39]

23. लोकनाथ [40]

24. हलाहल [41]

25. पद्मनतेश्वर [42]

26. हरि हरि हरिवाहनोद्भव [43]

27. त्रलोक्यवंशकर [44]

28. रक्तलोकेश्वर [45]

29. मायाजाल क्रम [46]

30. नीलकण्ठ [47]

31. सुगति सन्दर्शन [48]

32. प्रेतसंतर्पित [49]

33. सुखावती लोकेश्वर [50]

34. वज्र धर्म लोकेश्वर [51]

(ग) अन्य देव कोटियॉ

पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोक जीवन में वैदिक, लोक देवियों के प्रचलन पूजा मंदिर, देवालय प्राचीन काल के परम्परा से प्राप्त है। श्रमण आन्दोलन ने लोक के धार्मिक जीवन को अत्यअधिक प्रभावित किया जिसके परिणाम स्वरूप लोक जीवन में देवताओं के साथ–साथ देवियों की पूजा स्थानीय स्तर पर विकसित हुई। इन लोक देवियों के साहित्यिक एवं पुरातात्विक प्रमाण पूर्वी उत्तर प्रदेश के सर्वेक्षण में हमें प्राप्त हुआ है, जिनमें प्रमुख अनुलिखित पंक्तियों में प्रस्तुत है–

पूर्वी उत्तर प्रदेश में अमुक स्थानों से प्राप्त देवियों की सूची

क. मातृ देवी मूतियॉ:[52]

1. आसनस्थ मातृदेवी

प्राप्ति स्थल	कोपिया, बस्ती
आकार	75 ग 45 सेमी0
पदार्थ	मृण्य
तिथि	द्वितीय शताब्दी ई0

2. आसनस्थ मातृदेवी

प्राप्ति स्थल	कुशीनगर
आकार	18 ग 12 सेमी0
पदार्थ	मृण्य
तिथि	प्रथम शताब्दी ई0

2. आसनस्थ मातृ का

प्राप्ति स्थल	कुशीनगर
आकार	लगभग 50 ग 30 सेमी0
पदार्थ	मृण्य
तिथि	प्रथम शताब्दी ई0

ख. लक्ष्मी मूर्ति[53]

गजलक्ष्मी :

प्राप्ति स्थल	बस्ती
आकार	13.5 ग 8 सेमी0
पदार्थ	मृण्य
तिथि	द्वितीय शताब्दी ई0

ग. हारीति देवी [54]

लोक देवी :

प्राप्ति स्थल	कोपिया, बस्ती
आकार	26 ग 16 सेमी0
पदार्थ	मृण्य
तिथि	द्वितीय शताब्दी ई0

घ. नारी मूर्तियॉ[55]

1. नारी शीर्ष :[56]

प्राप्ति स्थल	कोपिया, बस्ती
आकार	9 ग 8.5 सेमी0
पदार्थ	मृण्य
तिथि	द्वितीय शताब्दी ई0

2. नारी शीर्ष :

प्राप्ति स्थल	कोपिया, बस्ती
आकार	11 ग 14 सेमी0
पदार्थ	मृण्य
तिथि	प्रथम शताब्दी ई0

3. नारी मूर्ति :

प्राप्ति स्थल	कोपिया, बस्ती

आकार	11 ग 12 सेमी0
पदार्थ	मृण्य
तिथि	प्रथम शताब्दी ई0

नारी शीर्ष :

प्राप्ति स्थल	सठियॉव
आकार	11 ग 9 सेमी0
पदार्थ	मृण्य
तिथि	द्वितीय शताब्दी ई0

नारी मूर्ति :

प्राप्ति स्थल	राजधानी
आकार	15 ग 10 सेमी0
पदार्थ	मृण्य
तिथि	द्वितीय शताब्दी ई0

आसनस्थ नारी :

प्राप्ति स्थल	कोपिया
आकार	32 ग 16 सेमी0
पदार्थ	पकी मिट्टी
तिथि	द्वितीय शताब्दी ई0

उपरोक्त मूर्तियों के अतिरिक्त अन्य स्थल सोहगौरा, वनरसिंह–डीह राजधानी, उस्मानपुर और फाजिलनगर के उत्खनन में भी नारी मूर्तियों के प्राप्त होने की सूचना प्राप्त हुई है।

महराजगंज से 1.9 ग 8 सेमी0 की स्त्री मृष्मूर्ति प्राप्त हुई है, जिसकी विशाल व लम्बी ऑखें, नासिका भाग खण्डित व मुख को चौड़ा प्रदर्शित किया गया है।

गोरखपुर की 11 ग 5 सेमी0 स्थानक नारी मृण्मूर्ति प्राप्त हुई हैं। द्विभुजी स्त्री का दक्षिण कर वक्ष को स्पर्श करता हुआ तथा वाम कर कट्यावलम्बित मुद्रा में प्रदर्शित किया गया है।

प्रसाधिका :

प्राप्ति स्थल	दियारा, फैजाबाद
आकार	12 ग 14 सेमी0
पदार्थ	मृण्य
तिथि	प्रथम शताब्दी ई0

विश्णु पुराण में देवियों की सूची [57]

1. सरस्वती	2. रति	3. श्रद्धा
4. मेघा	5. देवमातृका	6. श्री
7. निद्रा	8. पृथिवी	9. प्रज्ञा
10. तुष्टि	11. उमा	12. मेना
13. भद्रकाली	14. कात्यायनी	15. धृति
16. स्वाहा	17. स्वधा	18. ऋद्धि
19. अनसूया	20. क्षमा	21. सुभीमा
22. देवसेना	23. वेला	24. ज्योत्सना
25. शची	26. गौरी	27. वरूणानी
28. यमपत्नि	29. धूमोर्णा	30. सुमहा भागा
31. मृत्युच्छाया		

मत्स्य पुराण में 200 देवियों की सूची [58]

महेश्वरी	ब्रह्मी	कौमारी

मलिनी	सौपर्णी	वायव्या
शाक्री	नैर्ऋती	सौरी
सौम्या	शिवा	दूती
चामुण्डा	वारूणी	वाराही
नरसिंही	वैष्णवी	चलच्छिखा
शतानन्दा	भगानन्दा	पिच्छिखला
भगमालिनी	व्ला	अतिवला
रक्ता	सुरभी	मुख मण्डिका
मातृनन्दा	सुनन्दा	विडाली
शकुनी	श्रेवती	महारक्ता
पिलपिच्छिका	जया	विजया
जयन्ती	टपराजिता	काली
महाकाली	ठती	सुभगा
दुर्भगा	क्राली	नन्दिनी
टदिति	थ्दति	भारी
मृत्यु	कर्णमोटी	ग्राम्या
डलूकी	घटोदरी	कपाली
वज्रहस्ता	पिशाची	राक्षसी
भुशुण्डी	शांकरी	चण्डा
लाङ्गली	कुटमी	खेटा
स्लोचना	धुम्रा	एकवीरा
करालिनी	विमालदांष्ट्रणी	श्यामा
त्रिजटी	कुक्कुटी	वैनायकी
वैताली	उन्मतोदुम्बरों	सिद्धि
लेलिहाना	केकरी	गर्दभी

भृकुटी	ब्रह्मपुत्री	प्रेतयाना
विडाम्बिनी	क्रौंचा	शैलमुखी
थ्वनता	सुरसा	दनु
उषा	रम्भा	मेनका
सलिला	चित्ररूपिणी	स्याहा
स्वधा	वष्टकारा	धृति
कपर्दिनी	माया	विचित्ररूपा
कामरूपा	संगमा	मुखोविला
मंगला	म्हानासा	महामुखी
कुमारी	श्रोचना	भीमा
स्दाहा	मदोद्धता अलम्बाक्षी	कालकर्णी
कुम्भकर्णी	म्हासरी	केशिनी
शेषिनी	लम्बा	पिंगला
लोहितामुखी	धष्टाखा	दष्ट्राला
श्रोचना	काकजंद्धिका	गोकर्णिका
गोकर्णिका	अजमुखिका	महाग्रीवा
महामुखी	उल्कामुखी	धूमशिक्षा
कम्पिनी	परिकाम्पिनी	मोहना
कल्पना	क्ष्वेला	निर्भया
बाहुशालिनी	सर्पकर्णी	एकाक्षी
विशोका	नन्दिनी	ज्योत्सनामुखी
रभसा	निकुम्भा	रक्त कल्पना
अलिकारा	म्हाचिता	चन्द्रसेना
म्नोरमा	अदर्शना	हरत्पापा
मतंगी	लम्बमेखला	अबला

व्चना	क्ली	प्रमोदा
लांगलावती	चित्रा	चित्रजला
कोणा	शान्तिका	अद्यविनाशिनी
लम्बस्तती	ललम्बसरा	विसरा
वासन्यूणिनी	स्खलन्ती	दीर्घ केशी
सुचिरा	सुन्दरी	शुमा
अयोमुखी	कटुमुखी	क्रोधिनी
अशनी	कुटुम्बिका	मुक्तिका
चन्द्रिका	वालमोहिनी	सामान्या
ळासिनी	लम्बा	कोविदारी
स्वासती	शंकुकर्णी	महानादा
म्हादेवी	महोदरी	हुंकारी
रूद्रसुसता	रूद्रेशी	भूतडामरी
पिण्डजिस्वा	शिवा	ज्वालामुखी
अलक्ष्मी		

वायु पुराण में देवी सूची[59]

स्वाहा	स्वधा	म्हाविद्या
मेघा	लक्ष्मी	सरस्वती
अपर्णा	एकपर्णा	पाटला
डमा	हेमन्ती	षष्ठी
कल्याणी	ख्याति	प्रज्ञा
मताभागा	गौरी	आर्या
प्रकृति	नियता	रौद्री
दुर्गा	भद्रा	प्रमाधिनी

कालराति	महामाया	श्रेवती
भूतनायिका	गौतमी	कौशिकी
चण्डी	सती	कुमारी
यादवी	बहिर्ध्वजा	शूलधरा
परमब्रह्मचारिणी	माहेन्द्री	इन्द्रभागिनी
वृषकन्या	एकवाससा	अपराजिता
सिंह वाहिनी	एकानंशा	माया
महिषमर्दिनी	भद्रकाली	

आज भी बंगाल से लेकर गुजरात तक और हिमालय से लेकर दक्षिण के तमिल प्रदेश तक किसी न किसी रूप में वीर ब्रह्म की पूजा पायी जाती है।[60] प्राचीन काल में जिसे यक्ष पूजा कहते थे, उसी की परम्परा वीर ब्रह्म की पूजा में है।[61] प्राचीन साहित्य, कला और धर्म इन तीनों क्षेत्र में यक्ष–विषयक मान्यता ने अपना प्रभाव डाला था। ब्राह्मण धर्म, बौद्ध धर्म जैन धर्म इन तीनों धर्मों पर यक्ष पूजा का प्रभाव पड़ा। आचार्य श्री आनन्द कुमार स्वामी ने इस विषय पर सर्वप्रथम प्रकाश डाला था। उनके प्रदर्शित मार्ग से किन्तु और भी परिवर्द्धित सामग्री की सहायता लेते हुए इस विषय का यहॉ प्रतिपादन किया जायेगा।

वैदिक देवता और लोक देवता इन दोनों के मेल–जोल की प्रक्रिया वैदिक युग में ही आरम्भ हो गयी थी। जीवन के इस तथ्य का प्रमाण वैदिक साहित्य में उपलब्ध होत है। अथर्ववेद के एक सूक्त[62] में बड़ी स्वभाविक रीति से वैदिक देवों के साथ अन्य लोक देवताओं का अनौपचारिक उल्लेख पाया जाता है। उनके नामों के परिगणन में कोई क्रम नहीं है। दोनो एक दूसरों के साथ मिल गए हैं। सूक्त का ऋषि जब अपने समकालीन देवताओं के विषय में सोचने लगा तो लोक और वेदों दोनो ही कोटियों के देव उसके दृष्टिपथ में एक साथ उतिराने लगते हैं।

लोक–देवियॉः

वासुदेवशरण अग्रवाल ने मत्स्य पुराण के सांस्कृतिक अध्ययन में लोक प्रचलित देवियों का उल्लेख किया है, जिनकी संख्या में लगभग 200 की संख्या में मानते हैं।[63] इनमें से लोक देवियों के निम्नलिखित नाम ज्ञातव्य हैं–

1. माहेश्वरी	2. ब्राह्मी	3. कौमारी
4. मालिनी	5. सौपर्णी	6. वायव्या
7. शाक्री	8. नैर्ऋती	9. सौरी
10. सौम्या	11. शिवा	12. दूती
13. चामुण्डा	14. वारूणी	15. वाराही
16. नारसिंही	17. वैष्णवी	18. चलच्छिखा
19. शतानन्दा	20. भगानन्दा	21. पिच्छिखला
22. भगमालिनी	23. व्ला	24. अतिवला
25. रक्ता	26. सुरभी	27. मुख मण्डिका
28. मातृनन्दा	29. सुनन्दा	30. विडाली
31. शकुनी	32. श्रेवती	33. महारक्ता
34. पिलपिच्छिका	35. जया	36. विजया
37. जयन्ती	38. अपराजिता	39. काली
40. महाकाली	41. इती	42. सुभगा
43. दुर्भगा	44. कराली	45. नन्दिनी
46. अदिति	47. दिति	48. भारी
49. मृत्यु	50. कर्णमोटी	51. ग्राम्या
52. उलूकी	53. घटोदरी	54. कपाली
55. वज्रहस्ता	56. पिशाची	57. राक्षसी
58. भुशुण्डी	59. शांकरी	60. चण्डा
61. लाङ्गली	62. कुटमी	63. खेटा
64. सुलोचना	65. धुम्रा	66. एकवीरा

67. करालिनी 68. विमालदांष्ट्रणी 69. श्यामा

70. त्रिजटी 71. कुक्कुटी 72. वैनायकी

73. वैताली 74. उन्मतोदुम्बरों 75. सिद्धि

76. लेलिहाना 77. केकरी 78. गर्दभी

79. भृकुटी 80. ब्रह्मपुत्री 81. प्रेतयाना

82. विडाम्बिनी 83. क्रौंचा 84. शैलमुखी

85. विनता 86. सुरसा 87. दनु

88. उषा 89. रम्भा 90. मेनका

91. सलिला 92. चित्ररूपिणी 93. स्याहा

94. स्वधा 95. वष्टकारा 96. धृति

97. कपर्दिनी 98. माया 99. विचित्ररूपा

100. कामरूपा 101. संगमा 102. मुखोविला

103. मंगला 104. महानासा 105. महामुखी

106. कुमारी 107. रोचना 108. भीमा

109. सदाहा 110. मदोद्धता 111. कालकर्णी

अलम्बाक्षी

112. कुम्भकर्णी 113. महासरी 114. केशिनी

115. शेषिनी 116. लम्बा 117. पिंगला

118. लोहितामुखी 119. धष्टाखा 120. दष्ट्राला

121. रोचना 122. काकजंद्धिका 123. गोकर्णिका

124. गोकर्णिका 125. अजमुखिका 126. महाग्रीवा

127. महामुखी 128. उल्कामुखी 129. धूमशिक्षा

130. कम्पिनी 131. परिकाम्पिनी 132. मोहना

133. कल्पना 134. क्ष्वेला 135. निर्भया

136. बाहुशालिनी 137. सर्पकर्णी 138. एकाक्षी

139.	विशोका	140.	नन्दिनी	141.	ज्योत्सनामुखी
142.	रभसा	143.	निकुम्भा	144.	रक्त कल्पना
145.	अलिकारा	146.	महाचिता	147.	चन्द्रसेना
148.	मनोरमा	149.	अदर्शना	150.	हरत्पापा
151.	मातंगी	152.	लम्बमेखला	153.	अबला
154.	वंचना	155.	काली	156.	प्रमोदा
157.	लांगलावती	158.	चित्रा	159.	चित्रजला
160.	कोणा	161.	शान्तिका	162.	अद्यविनाशिनी
163.	लम्बस्तती	164.	ललम्बसरा	165.	विसरा
166.	वासन्यूणिनी	167.	स्खलन्ती	168.	दीर्घ केशी
169.	सुचिरा	170.	सुन्दरी	171.	शुमा
172.	अयोमुखी	173.	कुस्मुखी	174.	क्रोधिनी
175.	अशनी	176.	कुटुम्बिका	177.	मुक्तिका
178.	चन्द्रिका	179.	वालमोहिनी	180.	सामान्या
181.	घासिनी	182.	लम्बा	183.	कोविदारी
184.	सवासती	185.	शंकुकर्णी	186.	महानादा
187.	महादेवी	188.	महोदरी	189.	हुंकारी
190.	रूद्रसुसता	191.	रूद्रेशी	192.	भूतडामरी
193.	पिण्डजिस्वा	194.	चलज्जवाला	195.	शिवा
196.	ज्वालामुखी	197.	ज्येष्ठा		

(अलक्ष्मी)

महाभारत[64] के आरण्यक पर्व में लोक की कुछ छोटी देवियों के नाम इस प्रकार है –

काकी हालिमा रूद्रा वृहली आर्या

पलाल मित्रा

आदि देवियों के नाम है।

वायुपुराण[65] में उल्लिखित देवियों का नामोल्लेख :–

1. स्वाहा	2. स्वधा	3. म्हाविद्या
4. मेधा	5. लक्ष्मी	6. महाभागा
7. गौरी	8. आर्या	9. प्रकृति
10. नियता	11. रौद्री	12. दुर्गा
13. भद्रा	14. प्रमाथिनी	15. कालरात्रि
16. महामाया	17. रेवती	18. भूतनायिका
19. गौतमी	20. कौशिकी	21. चण्डी
22. कात्यायनी	23. सती	24. कुमारी
25. यादवी	26. सरस्वती	27. अपर्णा
28. एकपर्णा	29. पाटला	30. उमा
31. वरदा	32. वाहिर्ध्वजा	33. शूलधरा
34. परमब्रह्मचारिणी	35. माहेन्द्री	36. इन्द्रभगिनी
37. वृषकन्या	38. एकवाससा	39. अपराजिता
40. सिंहवाहिनी	41. एकनंशा	42. माया
43. महिषमर्दिनी	44. भद्राकली	45. ळेमवती
46. षष्ठी	47. कल्याणी	48. रन्याति
49. प्रज्ञा		

कश्यप संहिता[66] के रेवती कल्प में उल्लिखित कुषाण कालीन देवियों की सूची की नाम भी प्राप्त होता हैः–

रेवती	स्तम्भनी	भद्रकाली
जातहारिणी	पोषणा	रौद्री
पिलिपिच्छिका	नाकिनी	वर्धिका

रौद्री	पिशाची	असाध्या
वारूणी	यक्षी	पुण्यजनी
उग्ररेवती	वारूणी	पौरूषादिनी
शुष्करेवती	पष्ठी	संर्दशी
कटम्भरा	मीरूका	क्रकोतकी
विकुटा	याम्या	इन्द्रवडवा
दारूणा	मातंङ्गी	वडवामुखी
मोहिनी		

इस प्रकार रेवती कल्प के अन्तर्गत अनेक प्रकार की दिव्य और मानुषी रेवती देवियों की सूची प्राप्त होती है, उन्हें बच्चों की देवियॉ होने के कारण जातहारिणी संज्ञा दी गई हैं।[67] यमी कहा गया है कि इन देवियों के और भी भेद थे जैसे– प्रत्येक जाति की अलग–अलग जातहारिणी देवी थी। इसी प्रकार देश भेद से लगभग 29 प्रकार की जातहारिणी देवियॉ कहीं जाती थीं –[68]

सूत	मागध	ेल्न
नमक	भेद	शक
आभारिक	वेन	डौम्ब
यवन	हूण	कुक्कस
उवाक	पल्लव	पार्षक
अम्बष्ठ	द्रमिड	तुषार
किरात	प्राव्यक	थ्संहल
कम्बोज	शवर	चण्डाल
ओडू	आवन्त्य	शम्बर

इस प्रकार अस्तिक, निषाद, वर्णसंकर, देशी–विदेशी अनेक लोगों की देवियों की मान्यता उस युग में थी। विदेशों के लोग यहॉ आकर समाज में रहते हुए अपनी–अपनी देवियों की उपासना करते रहते थे। इसी प्रकार उसके नाम हैं :–[69]

अयस्करी (लोहारों की)	कुविन्दी (कोलियों)
तक्षिणी (बढ़इयों की)	सौन्चक (दर्जियों की)
कुलाली (कुम्हारों की)	रजकी (रंगरेजों)
पदकरी (चमारों की)	नेजिका (धोबी)
मालाकारी (माली)	गोपी (ग्वालों की)

इस प्रकार पेशेवारों में अपनी–अपनी देवी थी, जिनका सामान्य नाम कारूकी–जातहारिणी था। आज तक गॉवों में इन पेशेवरों की अलग–अलग माताएं पूजी जाती हैं।[70]

इनके अतिरिक्त शकुनी, चतुस्पदी, सर्पा, मत्सी, वनस्पति में पांच भेद और बताये गये हैं और इनके भी अनेक उपभेद और रूप कहे गये हैं।

इस प्रकार के देवी–देवता प्रायः प्रत्येक देश में पाये जाते हैं और इस देश में भी उनकी संख्या कम न थी। उनमें से कुछ का उल्लेख प्राचीन साहित्य और कला में बताया गया हैं जैसे भरहुत के स्तूप में कुछ यक्ष और देवियों क नाम –

सुपवस यक्षो, विरूद्क यखो, गंगित यखो, सुचिलोमयखों, कुपिरोयखो, अजकालको यखो, सुदसना यखी, सिरिमा देवता, चुलकोका देवता, मकाकोका देवता।

प्रस्तुत ग्रन्थ में अत्यन्त प्राचीन कुछ लोक देवताओं को चुनकर उनके 'मह' नामक उत्सवों का विशेष अध्ययन किया गया है।

वी0सी0 भटाचार्य श्री लक्ष्मी के वाहन के रूप में सिंह का उल्लेख करते है। (इण्डियन इमेजेज 1, पृ0 37); डॉ0 कुसुम जायसवाल, उत्तर भारत की प्राचीन हिन्दू देवी मूर्तियॉ पृ0 – 61–63

संदर्भ ग्रन्थ एवं पाद टिप्पणियाँ

1. वनर्जी, जे0एन0, दि डीवेलपमेनट ऑप हिन्दू आइकानोग्राफी, कलकत्ता, 1956, पृ0 2

2. महावीर, निर्वाण के 980 या 993 वर्ष वाद (454 या 514 ई0) : द्रष्टव्य, जैकोवी, एच0, जैन सत्रू, भाग 1, सेकेन्ड बुक्स आव दि ईस्ट, खं0 22 दिल्ली, 1973 (पु0मु0)।, प्रस्तावना, पृ0 37, विण्टरनित्ज, म0, ए हिस्ट्री आफ लिट्रेचर, खं0 2स, कलकत्ता 1993, पृ0 432

3. इसमें द्वादश अंगों के अतिरिक्त 12 उपांग, 4 छेद, 4 मूलक और एक आवश्यक ग्रन्थ सम्मिलित थे। महावरी के मूल उपदेशों का संकलन द्वादश अंगों में था। (समवायांग सूत्र 1 और 136)।

4. जैकोवी, एच0, पू0नि0, पृ0 37–44, विण्टर नित्ज, एम0पू0नि0, पृ0 434।

5. सिकन्दर, जे0सी0, स्टडीज इन दि भवती सूत्र, मुजफ्फरपुर, 1964, पृ0 32–38

6. समवयांग सूत्र 18, पउमचरिय, 1.1–2, 38–42

7. हस्तीमल, जैन धर्म का मौलिक इतिहास, खं0 1 जयपुर 1971, पृ0 46–47

8. व्याख्या प्रज्ञप्ति 5, 9.227

9. जम्बुद्दीवेणं दीवे भारहे वासे इमीसेणं ओसप्पिणीए चउवीसं तित्थगरा होत्था, तं जहा–उसभ, अजिय, सम्भव, अभिनन्दण, सुमह, पउमप्पह, सुपास, चन्दप्पह, सुविहिपुप्फदंत सायल, सिज्जस, वासु पुज्ज, विमल, अनन्त धम्म, सन्ति, कुंघु, अर, मल्लि, मुनिसुष्वय, णामि, णोमि, पास, वाड्गमाणोय, समवायांग सूत्र 157।

10. जैकोवी, एच0, जैन सूत्र, भाग 2, सेक्रेड बुक्स ऑ दि ईस्ट, सं0 45, दिल्ली, 1973 (पु0मु0), पृ0 119–29।

11. वे महान् आत्माएं जिनका मोक्ष प्राप्त करना निश्चित है।

12. पउमचरिय 5, 145–57

13. वैशाखीय, महेन्द्र कुमार, कृष्ण इन दि जैन केनन, भारतीय विद्या, सं0 8, अं0 9–10, पृ0 123

14. दोशी, वेचरदास, जैन साहित्य का बृहद् इतिहास, भाग 1, वाराणसी 1966, पृ0 55

15. 12 चक्रवर्तीयों की सूची में तीन शान्ति कुंथु, अर, जिनं भी सम्मिलित है, ये जिन एक ही भव में 'जिन' और चक्रवर्ती दोनो हुए।

16. जैकोवी एच0 जैन सूत्रज, भा0 2, पृ0 112–19; विण्टरनित्ज, एम0पू0नि0, पृ0 469।

17. जैन ग्रन्थों में इन्द्र का देवेन्द्र और शक्र नामों से उल्लेख है।

Panigrah, Kc Archaeological Remains of Bhuvneswar, Fig. 22

18. सभी ध्यानी बुद्धि की आकृतियॉ एक समान प्रदर्शित होती हैं, वे योगासन में ध्यान मग्न दुहरे कमलासन पर बैठे दिखयी देते हैं। उड़ीसा के संग्रहालय मे सुरक्षित मध्यकालीन अमोघ सिद्धि प्रतिमा के सिर पर नागफणों का छत्र प्रदर्शित है।

19. भट्ठशाली महोदय के अनुसार पंचध्यानी वुद्धों की प्रतिमाएं निम्न अभिप्रायां को स्पष्ट करती हैं

Bhattasali, M.K, Iconography of Buddgist and Brahm-nical Sculptures in the Dacca Museum. PP. 18-21.

20. बोधिसत्व की कल्पना बौद्ध धर्म के महायान सम्प्रदाय में हुई जिसका शाब्दिक अर्थ बोध प्राप्त करने की इच्छा रखने वाला व्यक्ति (वोधौसत्वम् अभिप्रायोस्येति वोधिसत्वः) वोधचयतिवार के तृतीय परिच्छेद में वोधिसत्व के आदर्श का सुन्दर वर्णन है।

21. मैत्रेय के प्रतिमा का निर्माण कुषाण युग में मथुरा और गान्धार की कला में हुआ है।

गेटे महोदय के अनुसार – भारतीय कला में मैत्रेय धर्म चक्र प्रवर्तन मुद्रा में प्रदर्शित हैं। इन्हें हीनयान और मह्यान दोनों में प्रतिष्ठा प्राप्त है।

22. गुहय समाज का रचनाकाल 300 ई0 के लगभग हैं और आर्य मंजू श्री मूलकल्प उससे प्राचीन समझा जाता है। इनका उल्लेख आर्यमंजु श्री मूलकल्प और गुह्यसमाज में प्राप्त होता है। सारनाथ, बिहार, बंगाल, नेपाल आदि से अनेक इनकी प्रतिमाएं मिली हैं।

23. अमिताभ ध्यानी बुद्ध से उत्पन्न वज्रराग वज्रपर्यक आसन पर ध्यान मुद्रा में होते हैं।

24. धर्मधातु की उद्धावना भी ध्यानी बुद्ध अमिताभ से हुई है। जिन्ते चतुर्भुजी और अष्टभुजी रूप में ललितासन में बैठे दिखाया गया है।

25. अक्षोभ्य से उत्पन्न मंजुश्री के विभिन्न रूपों में मंजुघोष उल्लेखनीय है साधनमाला में इसे सिंह पर ललितासन मुद्रा में बैठे तथा विभिन्न आभूषणों से सुसज्जित बतलाया गया है।

26. अक्षोभ्य से उद्भूत इस मंजूश्री के मुकुट पर अक्षोभ्य की प्रतिमूर्ति होती है।

27. अक्षोभ्य से उत्पन्न पीले रंग की प्रतिमा को चतुर्भूजी या षड्भूजी रूप में प्रत्यालीढ़ मुद्रा में दिखाया गया है।

28. नाम संगति मंजुश्री की उद्भावना भी ध्यानी बुद्ध अक्षोभ्य से हुई है, जिसके तीन मुख है।

29. वागीश्वर (इण्डियन म्यूजियम) कलकत्ता में संगृहीत वागीश्वर प्रतिमा को सिंह पर आसीन न दिखाकर राजा सिंहासन पर बैठे दिखाया गया है।

30. पंचध्यानी बुद्धों से उद्भूत मंजुवर की प्रतिमा ललितया अर्धपर्यंक आसन और धर्मचक्र मुद्रा में प्रदर्शित होती है।

31. मंजुवज्र को त्रिभुज और षड्भुजी रूप में कमलधार चन्द्रासन पर प्रदर्शित किया जाता ह।

32. मंजु कुमार का अंकन मंजुव्रज के समान होता है, लेनि पशु पर आसीन प्रदर्शित किया जाता है।

33. ढाका संग्रहालय में सुरक्षित अपरचन की प्रतिमा में अनेक मुकुट पर चार ध्यानी बुद्धों की आकृति प्रदर्शित है।

34. यह स्वतन्त्र मंजुश्री का वर्ण श्वेत होता है, इन्हे कमलाधार, चन्द्रासन पर प्रदर्शित किया जाता है।

35. इनका वाहन शडिल होता है। इन्हे षोडशवर्षीय एक कुमार के रूप में अर्धपर्यकासन में स्थित प्रदर्शित किया जाता है।

36. मंजुनाथ को त्रिमुख और षड्भुजी रूप में अपने हाथों में चक्र, वज्र, रत्न, कमल, खड्ग और पुस्तक लिए प्रदर्शित किया जाता है।

37. वोधिसत्व में अवलोकितेश्वर सबसे अधिक लोकप्रिय हैं, लगभग तीन सौ वर्ष पुराने अवलोकितेश्वर के 108 रूपों के चित्र नेपाल के मच्छदरवहत, नामक बौद्ध विहार में एवं एक रेलिंग स्तम्भ पर लगभग तृतीय शती ई0 की निर्मित अवलोकितेश्वर की प्रतिमा राज्य संग्रहायल लखनऊ में सुरक्षित है।

38. भागलपुर जिले के कोलगॉ से प्राप्त और पटना संग्रहालय में सुरक्षित (स0 आर्के0 95) प्रतिमा में षडक्षरी महाविद्या मणिधर, बोधिसत्व एवं अन्य पार्श्व देवताओं सहित षडक्षरी लोकेश्वर को प्रदर्शित किया गया है।

39. नेपाल में इस देवता की पाषाण निर्मित प्रतिमाओं के अतिरिक्त कॉसे की बनी हुई प्रतिमा भी प्राप्त हुई है, जिसके दो हाथों, तीन नेत्रों का वर्णन किया गया है।

40. लोकेश्वर को द्विभुजी रूप में ललितासन या अर्धपर्यकासन में प्रदर्शित किया गया है। जिसके साथ तारा, सुधन, कुमार, भृकुटी तथा ह्यग्रीव को दिखाया जाता है।

41. लोकनाथ देवता को वज्रपर्यक, ललित, पर्थक, आसन में प्रदर्शित किया गया है, इनके साथ तारा और ह्यग्रीव को प्रदर्शित किया जाता है।

42. हलाहल के तीन मुख छः भुजाओं को प्रदर्शित करते हुए प्रज्ञा का प्रदर्शन किया जाता है।

43. अष्टभुजी रूप में अर्द्धपर्यंक आसन में इन्हें प्रदर्शित किया जाता है।

44. इण्डियन म्यूजियम कलकत्ता में संगृहीत हरि हरि हरि वाहनोद्भव अवलोकितेश्वर की एक मध्यकालीन प्रतिमा में देवता को विष्णु के ऊपर आरूढ़ दिखाया गया है। विष्णु के नीचे गरूढ़ और उसके नीचे सिंह प्रदर्शित है।

45. इस देवता का अंकन चतुर्भुजी अथवॉ द्विभुजी रूप में कमल धारण किये हुए प्रदर्शित किया जाता है।

46. इस देवता के पॉच मुख, बारह हाथ तथा तीन नेत्र होते हैं, देवता प्रत्यालीढ़ आसन में प्रदर्शित होता है।

47. इस देवता की कल्पना हिन्दू देवता शिव के आधार पर की गयी प्रतीत होती है, इसका वर्ण पीला होता है।

48. इनका वर्ण श्वेत होता है, इनको षडभुजी रूप में प्रदर्शित किया जाता है।

49. यह भयानक आकृति का देवता है, इसे षड़भुजी रूप में दिखाने का विधान मिलता है।

50. इस लोकेश्वर के तीन मुख और 6 हाथ होते हैं, श्वेतवर्णी इस देवता को ललितासन मुद्रा में प्रदर्शित किया जाता है।

51. इस देवता का वर्ण श्वेत लाल होता (रक्ताश्वेत) है, इसे मयूरासीन प्रदर्शित किया जाता है।

52. प्रचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान, पृ0 19

53. विष्णु पत्नी क्षमादेवी माधवी माधव प्रियाम्। 0.5/87/25

54. वि0 धर्मो0 पु0, 19, 118, 82, 3

55. पद्मस्था पदम् हस्ता च गजोत्क्षिप्त घटप्लुता।

श्री पद्ममालिनी चैवं कालिका कृतिरेव च।

56. सिंहासन का अर्थ प्रियवाला शाह ने 'सिंह' के आसन से लिया है।

57. प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान, पृ0 120

Vishnudhar mottara Purana, Part III, Vol. II, P. 154

58. मथुरा संग्रहालय संख्या–44, 3145; प्राचीन भारतीय विज्ञान, पृ0 112

59. प्राचीन भारतीय ूर्ति विज्ञान, पृ0–118

60. गोविन्द चन्द रायः प्राचीन भारत में लक्ष्मी प्रतिमा पृ0–13–18

61. अष्टाध्यायी, 6/2/74

62. राय पसेणीय सुक्त वैध सं0 पृ0 134

63. डब्ल्यू0 वाइगेन, फिगरिन्स क्राम सिल्यूशिया, यूनिवर्सिटी आफ गंधा मिरिगान, 1939, पृ0 27

64. संकालिया, तत्रैव, पृ0–47

65. मृदुला जायसवाल, कुषाण कले आर्ट आफ गंगा, प्लेन्स, पृ0 85–86

66. विष्णुपुराण 3, 221, 7

67. मत्स्यपुराण 1797, 10–32

68. वायुपुराण–9–85–98

69. जय नारायण पाण्डेय, पुरातत्व विमर्श, पृ0 265

70. वासुदेवशरण अग्रवाल लोक धर्म, पृ0 12–14

71. काश्यप संहिता रेवती कल्प पृ0 153–162

72. इसके विस्तृत विवरण के लिए देखिये, ब्लूमफील्ड, रि0ने0 88–89

73. दित्य दित्या दित्ययत्युत्तर पदाण्ष्य, (अष्टा0 4/1/85) के अनुसार अदिति शब्द से अपत्यार्थण्य प्रत्यय।

74. इन्द्रों धाता भगस्त्वष्टा.....वरूणों यमः

विवस्वान् ..... विष्णुरेव च

मारी चात् ..... पुत्रानदितिरूत्तमान

भारीचात्.....पुत्रानदितिरूत्तमान।

भत्स्यपु0 6/4:5

75. ऋ0 2/27/1

76. तु0 की अग्नि र्होता कवि क्रतु0 ऋ0 वे0 1/1/5

77. सूर्य के श्वेत अश्व के रूप में वर्णन के लिए अथर्व वे0 20/135/7, 11

78. ऋ0 8/18/15

79. ऋ0वे0 8/47/8

80. अ0वे0 2/12/4, अ0वे0 7/7/1 में

81. अ0वे0 1/9/1

82. ऋ0 17/27/1, 10/88/19

83. अ0वे0 13/1/45, ऋ0वे0 10/158/14, अ0वे0 5/24/9, 10/90/13

84. ऋ0 10/16/3, ऋ0 10/16/3 मे 10/37/1, 1/50/2, पश्यन् जन्मानिसूर्यः

□□□□□